Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

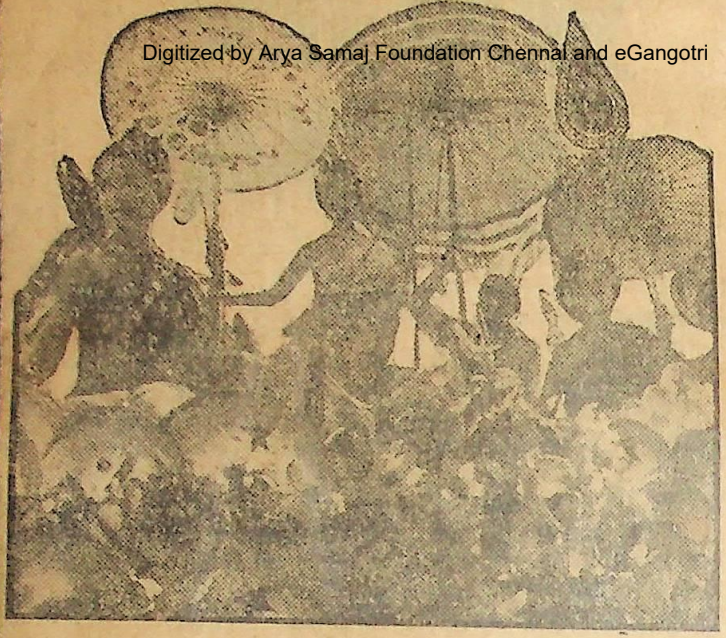

जब थाईदेश में वसंत खिलता है 17.2.80

# साहित्य के माध्यम से मैत्री

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री, थाईदेश-विलासम् (इस्टर्न बुक लिंकर्स, (दिल्ली), मू. ४० रु.

संस्कृत के प्रख्यात वैयाकरण और कवि प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री ने 'शर्मण्यदेशः सुतरां विभाति' तथा 'हिन्दुराचारितम्' आदि रचनाओं के बाद अब 'थाइदेशविलासम्' नामक खण्ड-काव्य की रचना करके संस्कृत-साहित्य की श्रीवृद्धि की है.

'थाइदेशविलासम्' खण्ड-काव्य में थाईलैंड के इतिहास, उसके प्राकृतिक सौंदर्य, थाई जनजीवन की झांकी तथा भारत-थाई सांस्कृतिक सम्बन्धों का, काव्यमय लेखा-जोखा इस ढंग से उपस्थित किया गया है कि यह पुस्तक काव्य के साथ-साथ प्रामाणिक यात्रा-संस्मरण भी बन गयी है.

संस्कृत के प्रवासी प्रोफेसर के नाते प्रो. सत्यव्रत को थाईलैंड में, जो लगभग दो वर्ष तक रहने का अवसर मिला, उसमें उन्होंने थाई भाषा ही नहीं सीखी, सारे देश की परिक्रमा भी की. इस काव्य में इन दोनों उपलब्धियों का प्रतिबिम्ब सर्वत्र दीखता है. यदि बैंकाक के चमचमाते बाजारों और शहरी थाइयों की सम्पन्नता का चित्रोपम चित्रण कवि ने विस्तार से किया है तो थाईलैंड के दक्षिणी और उत्तरी क्षेत्रों में अवस्थित ग्राम्य-देश, बौद्ध मठों और समुद्र-तट का सुरम्य वर्णन भी इस खण्ड-काव्य में है.

संस्कृत भाषा के प्राचीन काव्यों में भारत का प्रचुर वर्णन है, किन्तु विदेशों के वर्णन से संस्कृत भाषा को समृद्ध बनाने का सर्वाधिक श्रेय सम्भवतः प्रो. सत्यव्रत को ही दिया जायगा. यह काव्य भारत-थाई मैत्री को परिपुष्ट करने का कार्य करेगा तथा दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों में एक साहित्यिक सेतु के रूप में जाना जायगा. इस दृष्टि से पुस्तक में दिया गया संस्कृत कविता का थाई अनुवाद उपयोगी सिद्ध होगा. किन्तु यह बात समझ में नहीं आती कि प्रो. सत्यव्रत ने हिन्दी के बजाय अंग्रेजी अनुवाद क्यों दिया ? संस्कृत और अंग्रेजी को साथ-साथ चलाने की ब्रिटिश भद्रलोकीय परम्परा को यदि संस्कृत के आधुनिक कवि नहीं तोड़ेंगे तो कौन तोड़ेगा ?

● वैदिक

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

solo®

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक जंगल था. उसमें खूब बंदर रहा करते थे. आपस में वे सहयोग की भावना से काम किया करते थे. मजे में समय कट रहा था. किसी को किसी से कोई शिकायत नहीं थी.

अचानक एक दिन बिरादरी के चार बंदर काफी अरसे बाद शहर से लौट आये. ये चारों बंदर एक सरकस कम्पनी में काम करते थे. मगर अब वे बूढ़े हो चुके थे. उनमें पहले जैसी अब फुर्ती नहीं रह गयी थी. इसलिए सरकस के मालिक ने इन्हें छुट्टी दे दी थी.

जंगल के बंदर अपने इन भाइयों की वापसी पर बड़े खुश हुए. उन्होंने इनके सार्वजनिक सम्मान का आयोजन किया. प्रत्युत्तर में शहर से लौटे बन्दरों ने शहरी जीवन के खूब संस्मरण सुनाये. कुछ कड़वे कुछ मीठे. इन संस्मरणों को सुन कर जंगल के बंदरों का बड़ा मजा आया.

सिर्फ खटकने वाली जो बात थी वह यह कि मनुष्यों का व्यवहार इन दिनों बन्दरों के प्रति कुछ ठीक नहीं है. वे उन्हें जरा भी महत्व नहीं देते. उल्टे मूर्खता का प्रतीक मानते हैं.

शहर से लौटे एक सयाने बन्दर ने एक दिन यह बताया कि मनुष्यों की दुनिया में पिछले कई वर्षों से

## हंसगुल्ले

**क्यों** बेटे यह चोट कैसे लगी ? लगता है तुम फिर लड़ कर आये हो.'

'नहीं मां'

'सच, तो फिर चोट कैसे लगी ?'

'मैं सकेश के ऊपर बैठा था पर उसके पैर पकड़ना भूल गया.'

**बे**टे अतुल, मुझे बहुत दुःख है कि जब मैं आफिस से आ रहा था तब मैंने देखा कि तुम अपने से एक बहुत छोटे लड़के को पीट रहे थे. मेरी समझ में नहीं आता कि जब अभी से तुम्हारे ये हाल हैं तो बड़े होकर तुम क्या बनोगे ?' पिता ने अतुल को समझाते हुए कहा.

'स्कूल में गणित का मास्टर' अतुल ने उत्तर दिया.

● वीरेन्द्र कुमार जैन

## पहेलियां

चूं-चूं, घर-घर, मत डर, मत डर,
कभी न करती घर-घर-घर-घर,
हवा में उड़ती, कभी न रुकती,
पहुंचा देती जल्दी से घर.

* * *

अमचक-बमचक, चकचक-चकचक,
रेल चली भई, छुक-छुक-छुक-छुक,
जरा बताओ, पास में आओ,
कौन करे है, टुक टुक टुक टुक.

* * *

आसमान में उड़ती है—
यह बेचारी बिना परों के,
जो भी दौड़ में अव्वल है,
हाथ लगेगी भैया उसके.

* साइकिल * तार बाबू * पतंग

● अहद 'प्रकाश'

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.